फ़ज़ाइले सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा ब-ज़बाने उम्मुल मु'मिनीन आइशा

मुरत्तिब

खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी

डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

फज़ाइले सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا
ब ज़बाने
उम्मुल मु'मिनीन आ़इशा رضی اللہ عنہا

मुरत्तिब
ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी
डो. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

किताब का नाम : फज़ाइले सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा
ब ज़बाने
उम्मुल मु'मिनीन आइशा

मुरत्तिब : ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी : डो. शेहज़ाद हुसैन क़ाज़ी
फाउन्डर एन्ड चेरमेन
ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),
मोडासा, गुजरात, इन्डिया

सफहात : 24

सन इशाअत : फरवरी, 2019 (हिजरी 1440, 20 जमादिल आख़िर)

कम्पोसिंग/प्रिंटिंग : ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),
मोडासा, गुजरात, इन्डिया

ब इसाले सवाब

My Grand Mother

मरहूमा खोरवर जुबैदाखातून बिन्ते हुसैनमीया

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन(अहले सुन्नत)
मोडासा, गुजरात, इन्डिया
Contact No : 85110 21786

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल है। अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"फज़ाइले सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा ब ज़बाने उम्मुल मु'मिनीन आइशा"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अत्हार, ख़ास कर बनू फ़ातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो। ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरो पर उलमा को आले मुहम्मद को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा को इमाम नफ्सुसज़किया की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाक़िम जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया। एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अहले बैत के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रज़ा-ए-इलाही में शहीद हुए। कहीं हबीब इब्न मुजाहिर और हुर्र बनाकर करबला में आले मुहम्मद पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई, इमाम हाकिम, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हनीफा, इमाम शाफीई बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख़्वाजा गरीब नवाज, निजामुद्दीन औलिया, वारिसे पाक, मख्दुम माहिम और मख्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त बनकर आए। वक्तन फ वक्तन हर मैदान में गुलामानें अह्ले बैत नासबियत व खारजियत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे।

इस ज़माने में भी नासबियत और ख़ारजियत तमाम फिर्क़ो में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहुँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबियत की डोर कल सल्तनत के बादशाहो ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रख़कर लोगों से फजाइले अह्ले बैत छुपाकर, बुग्ज़े अह्ले बैत को आम करवा रहे थे वो ही नासबियत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्जीमों नें संभाल

ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फजाइले अह्ले बैत ﷺ छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस Democracy (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अह्ले बैत ﷺ नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आन व अह्ले बैत ﷺ से दूर किया जा रहा है। कुर्आन के तर्जुमा व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अह्ले बैत ﷺ पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलल्लाह ﷺ का कौल साबित है कि नबीए करीम ﷺ ने फरमाया :

"मैं जिसका मौला हूँ अली ؓ भी उसके मौला है"

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी) (कश्फुल अस्तार, लि-हैसमी) (रावी सिक्का)

मुख़्तसर हदीस :

"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अह्ले बैत ﷺ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नहीं होंगे ता आँ कि हौज पर आकर मुझ से मिले ।" (इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؓ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कुर्आन और अह्ले बैत ﷺ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है। आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अह्ले बैत ﷺ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अह्ले बैत ﷺ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है। मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को लम्बा नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है। अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

इस छोटे से रिसाले में अह्ले बैत ﷺ, अह्ले मुबाहिला ﷺ की वो शख़्सियत, नबी ﷺ की बेटी, वसी की ज़ौजा, सिब्तैन की माँ, इमामों की दादी, यौमे जज़ा में अर्श के सामने फरियाद करनेवाली, आख़िरत और दुनिया की औरतों की सरदार, अली मुर्तजा ؓ की अहलिया, मुन्तख़ब शख़्स की माँ, मुस्तफा की साहबज़ादी, जिसकी तारीफ इन्जील में की गई, मरियम ؑ के हमपल्ला, हर ख़ैर का इल्म रखनेवाली, सबसे मुकर्रम मुहम्मद ﷺ की बेटी, साहिबे वही व कुर्आन का मोती,

जिसके दादा ख़लील, सय्यिदा, तय्यिबा, ताहिरा, बतूल, फ़ातिमा ज़हरा की शान बयान की गई है। सय्यिदा ज़हराए पाक की शान को ख़ुदा ने एसी बलन्द की है कि हम जैसे गुनहगार, ख़ताकार, कमअक़्ल इन्सानो की हैसियत ही नहीं की हम उनकी शान बयान करे कि जिनके बारे में **हुज़ूर नबीए करीम फरमाते है :**

"कयामत के दिन एक निदा देनेवाला पर्दे के पीछे से आवाज देगा। ए अह्ले महशर। अपनी निगाहें झुका लो ताकि फातिमा बिन्ते मुस्तफा गुज़र जाए।"

(मुस्तदरक हाकिम रकम 4728) (असद-उल-गाबा, जिल्द-7, सफा-220)

अल्लाह हमको, हमारी ता-कयामत तक की नस्लों को सय्यिदा फातिमा ज़हरा के बच्चों की गुलामी अता करे. आमीन...

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से दुआ है कि मेरी इस काविश को कुबूल फरमाये और मेरी इस किताब के प्रकाशन का सवाब तमाम उम्मते रसूलुल्लाह के मोमिन व मोमिनात की रुहो को व मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण की जिन्हों ने मुझे बचपन से मुहब्बते अह्ले बैत शिख़ायी, उनकी रुह को अता फरमाये और उनकी मग़फिरत फरमाये, सय्यिदा जहराए पाक के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहराए पाक की कनीज़ो में शुमार करें। आमीन....

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"ख़तीबे अह्ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद, गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

अल्लाह ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह व अह्ले बैत की शफाअत नसीब फरमाए !

डो. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी
20 जमादील आख़िर, हिजरी 1440

अर्ज़े मुरत्तिब

उम्मते मुस्लिमा को इत्तेफाक़ और इत्तेहाद की जितनी ज़रूरत इस दौर में है, शायद ही किसी और ज़माने में रही होगी। हर तरफ दुश्मनाने इस्लाम उम्मत को पारा पारा करने की साज़िशों में लगे हुए हैं। ज़रूरत इस बात की है कि तहरीर और तक़रीर के ज़रिये उम्मत के इत्तेहाद को क़ायम किया जाए। इसी सिलसिले की एक कड़ी यह भी है जिस में सय्यिदा कायनात फ़ातिमा ज़हरा के फ़ज़ाइल अल्लाह के नबी की ज़ौजा मोहतरमा उम्मुल मु'मिनीन आ़इशा की जुबानी बयान हुए हैं। यह मुख्तसर मज्मूआ जल्दी में तैयार किया गया है। अल्लाह को मंजूर हुआ तो इंशा अल्लाह एक मुफ़स्सल किताब इस मौजूअ पर तैयार करूँगा।

तालिबे शफ़ाअते रसूल व बुतूल
ख़ुसरो क़ासिम
असिस्टेंट प्रोफेसर
मकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेन्ट
ए० एम० यू० अलीगढ़

हदीष : 1

١.   عن عائشه ،قالت: "كان النبي ﷺ اذا قدم من سفر قبل نحر فاطمة عليه السلام ،وقال: منها أشم رائحة الجنة".

(ينابيع المودة ص ٢٤٠)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब कभी सफ़र से वापस आते तो फ़ातिमा رضی اللہ عنہا का गला चूमते और फ़रमाते कि मैं इस से जन्नत की ख़ुशबू सूँघता हूँ।"

हदीष : 2

٢.   عن عائشه ،قالت: "كان النبي ﷺ كثيراً ما يقبل عرف فاطمة" (الجامع الصغير ٢/٢٩٤ للسيوطى)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि नबी अकरम ﷺ अक्सर फ़ातिमा رضی اللہ عنہا का सर चूमा करते थे।"

हदीष : 3

٣.   عن عائشة،قالت:قلت:" يا رسول الله ،مالك اذا جائت فاطمة قبلتها حتى تجعل لسانك في فيها [فمها] كله كأنك تريد أن تلعقها عسلاً؟ قال: نعم، يا عائشة، انى لما اسرى بى الى السماء أدخلنى جبرئيل الجنة، فناولنى منها تفاحة فأكلتها فصارت نطفة في صلبى ،فلما نزلت واقعت خديجة، فاطمة من تلك النطفة ،وهى حوراء انسية؛ كلما أشتقت الى الجنة قبلتها".

(تاريخ بغداد للخطيب ٥/٨٧)

तर्जुमा: “सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि मैं ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह عزوجل के रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم! क्या बात है कि सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا जब भी आती हैं, आप उन को बोसा देते हैं, यहाँ तक कि आप अपनी पूरी ज़ुबान उन के मुँह में डाल देते हैं, ऐसा मालूम होता है कि जैसे आप शहद चूस रहे हों। फ़रमाया: हाँ। ऐ आ़इशा رضی اللہ عنہا! मेराज की रात जब मैं आसमान पर गया तो जिबरईल علیہ السلام मुझे जन्नत में ले गए, वहाँ से मुझे एक सेब दिया। जब मैं ने उसे खाया तो वह मेरी पुश्त में नुत्फ़ा की शक्ल इख़्तियार कर गया। मेराज से वापस आ कर जब मैं सय्यिदा ख़दीजा رضی اللہ عنہا से हम बिस्तर हुआ तो उसी नुत्फ़े से सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا की तख़लीक़ हुई। वह इन्सानों की हूर है। जब भी मुझे जन्नत का इश्तियाक़ होता है, उसे बोसा दिया करता हूँ।”

हदीष : 4

۴. عـن عـائشة، قالت: كنت أرى رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقبل فاطمة، فقلت: يا رسول الله! انى أراك تفعل شيئاً ما كنت أراك تفعله من قبل، فقال لي: "يا حميراء، انه لما كان ليلة أسرى بى الى السماء أدخلت الجنة، فوقفت على شجرة من شجر الجنة لم أرى فى الجنة شجرة هي أحسن منها حسناً، ولا أبيض منها ورقة، ولا أطيب منها ثمرة فتناولت ثمرة من ثمرتها فأكلتها فصارت نطفة فى صلبى، فلما هبطت الأرض واقعت خديجة فحملت بفاطمة، فاذا أنا اشتقت الى رائحة الجنة شممت ريح فاطمة، يا حميراء، ان فاطمة ليست كنساء الآدمين ولا تعتل كما يعتللن".

(مقتل الحسين لاخطب الخطباء خوارزم، ج ۱، ص ۷۲-۷۳)

तर्जुमा: “सय्यिदा आ़इशा ﷞ बयान करती हैं कि मैं देखती थी कि नबी अकरम ﷺ सय्यिदा फ़ातिमा ﷞ को बोसा लेते हैं। अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मैं आप को एक ऐसा काम करते हुए देखती हूँ जो कि आज से पहले नहीं देखा। फ़रमाया: ऐ हुमैरा! मेराज की रात जब मैं जन्नत में गया तो जन्नत के एक दरख़्त के पास ठहर गया। मैं ने जन्नत में उस से ज़ियादा ख़ूबसूरत दरख़्त नहीं देखा था। उस की पत्तियों से ज़ियादा सफ़ेद पत्तियाँ नहीं देखी थीं और न उस के फल से ज़ियादा लज़ीज़ और पाकीज़ा फल देखा था। मैं ने उस का एक फल तोड़ा और खा लिया। वह मेरी पुश्त में नुत्फ़े की शक्ल में मुंतक़िल हो गया। ज़मीन पर आ कर सय्यिदा ख़दीजा ﷞ से हमबिस्तर हुआ तो सय्यिदा फ़ातिमा ﷞ का हमाल क़रार पा गया। जब मुझे जन्नत की ख़ुशबू का इश्तियाक होता है तो सय्यिदा फ़ातिमा ﷞ की ख़ुशबू सूँघ लिया करता हूँ। ऐ हुमैरा! सय्यिदा फ़ातिमा ﷞ दुनिया की औरतों की तरह नहीं हैं और न वह आम औरतों की तरह बीमार होती है।”

हदीष : 5

٥. عن عائشة، قالت: ” أقبلت فاطمة عليه السلام تمشي كأن مشيتها مشية رسول الله ﷺ“.(الصحيح لمسلم ج٤، ص١٩٠٥)

”عائشہ رضی اللہ عنہا بیان کرتی ہیں کہ فاطمہ پیدل چل کر آئیں۔ ان کے چلنے کا انداز رسول اکرم ﷺ جیسا تھا“۔

तर्जुमा: “सय्यिदा आ़इशा ﷞ बयान करती हैं कि सय्यिदा फ़ातिमा ﷞ पैदल चल कर आई। उन के चलने का अंदाज़ रसूले करीम ﷺ जैसा था।”

हदीष : 6

٦.   وقالت: " اذا أقبلت فاطمة كانت مشيتها مشية رسول الله ﷺ، و كانت لا تحيض قط؛ لأنها خلقت من تفاحة الجنة ، ولقد وضعت الحسن بعد العصر وطهرت من نفا سها فاغتسلت وصلت المغرب، ولذلك سميت الزهراء".(اخبار الدول،ص٨٧)

तर्जुमा: "सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا जब पैदल चल कर आई तो मालूम होता कि उन के चलने का अंदाज़ रसूले करीम ﷺ जैसा ही है। उन की चाल आम औरतों की तरह नहीं, बल्कि शाहाना होती थी। इस की वजह यह थी कि उन की तख़्लीक जन्नत के सेब से हुई थी। उन के यहाँ नमाज़े अस्र के बाद हसन رضی اللہ عنہ की विलादत हुई, वह निफ़ास से पाक हुई, गुस्ल किया और मग़रिब की नमाज़ अदा की। इसी वजह से उन का नाम ज़हरा رضی اللہ عنہا है।"

हदीष : 7

٧.   عن عائشة، قالت: أقبلت فاطمة تمشي كان مشيتها مشية رسول الله ﷺ فقال:" مرحبا بابنتي "، فأجلسها عن يمينه، أو عن شماله ، ثم أسر اليها حديثاً فبكت، فقلت لها : استخصك رسول الله ﷺ بحديثه، ثم تبكين ، ثم أسر اليها حديثا فضحكت ، فقلت: ما رأيت كاليوم فرحاً أقرب من حزن ،فسألتها عما قال؟ فقالت: ما كنت لأ فشي سر رسول الله ﷺ حتى اذا قبض سألتها ، فقالت انه سر الي

فـقـال:" ان جبريل كان يعارضني القرآن كل سـنة مرة، وانه عارضني العـام مرتين فلا أراه الا قد حضر أجلي ، وانـك أول أهـل بيتي لحاقاً بي، ونعم السلف أنا لـك "، فبكيت لـذلـك ، ثم قال: " ألا ترضين أن تـكـونـي سيـدة نساء الأمة أو نساء المسلمين "، فضحكت لذلك.

(المسند لاحمد بن حنبل، ج۴، ص ۲۸۲)

तर्जुमा: "उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा आइशा ﷺ फरमाती हैं कि सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ पैदल चल कर आई और उन की चाल रसूले करीम ﷺ जैसी थी। आप ﷺ ने फ़रमाया: बेटी! ख़ुश आमदीद। आप ﷺ ने सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ को अपने दाएँ या बाएँ बैठा लिया और सरगोशी करते हुए कोई ऐसी बात की कि वह रोने लगीं। मैं ने सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से कहा कि आप को रसूलुल्लाह ﷺ ने बात करने के लिए मुख़्तस किया, फिर भी आप रो रही हैं। आप ﷺ ने सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से दोबारा सरगोशी की। इस बार वह हँसने लगीं। मैं ने कहा: आज से पहले आप को इस तरह रोने के मअन बाद हँसते हुए नहीं देखा। मैं ने उन से पूछा कि क्या बात चीत हुई? सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ का राज़ खोलने वाली नहीं हूँ। जब नबीए करीम ﷺ की वफ़ात हो गई तो मैं ने सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से इस बारे में पूछा। उन्हों ने बताया के पहली बार सरगोशी करते हुए आप ﷺ ने फ़रमाया: जिबरईल عليه السلام मुझे हर साल कुर्आन का दौर सिर्फ़ एक बार कराते थे, लेकिन इस साल उन्हों ने दोबारा कुर्आन का दौर कराया है। मुझे लगता है कि मेरी वफ़ात का वक़्त करीब आ गया है। मेरे अहल में तुम सब से पहले मुझ से आ कर मिलोगी और मैं तुम्हारा बेहतरीन पेश रौ हूँ। यह सुन कर मैं रोने लगी। आप ने दोबारा कहा: क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो के उम्मत या मुसलमान औरतों की सरदार बनो, इस बात पर मैं हँसने लगी।"

हदीष : 8

٨. عن عائشة، انها قالت: " ما رأيت أحداً أشبه كلاماً وحديثاً من فاطمة برسول الله ﷺ وكانت اذا دخلت عليه رحب بها، وقام اليها، فأخذ بيدها، فقبلها، وأجلسها في مجلسه".

(المستدرک على الصحيحين للحاكم، ج٣، ص١٥٤)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा ﵂ अन्हा बयान करती हैं कि मैं ने बात-चीत और गुफ़्तगू में किसी को नहीं देखा कि वह सय्यिदा फ़ातिमा ﵂ से ज़ियादा कि वह सय्यिदा फ़ातिमा ﵂ से ज़ियादा नबीए करीम ﷺ से मुशाबहत रखता हो। जब वह आप से मिलने आतीं तो आप उन को ख़ुश आमदीद कहते और उन की मोहब्बत में खड़े हो जाते, उन का हाथ थामते, बोसा लेते और अपनी जगह पर उन को बिठाते थे।"

हदीष : 9

٩. عن عائشة ،قالت: " ما رأيت أحداً أشبه سمتاً ودلاً وهدياً برسول الله ﷺ في قيامها وقعودها، من فاطمة بنت رسول الله ﷺ.

قالت: وكانت اذا دخلت على النبي ﷺ قام اليها فقبلها و أجلسها في مجلسه، وكان النبي ﷺ اذا دخل عليها قامت من مجلسها فقبلته وأجلسته في مجلسها.

فلما مرض النبي ﷺ دخلت فاطمة فأكبت عليه فقبلته ثم رفعت رأسها فبكت؛ ثم أكبت عليه ثم رفعت رأسها فضحكت.

....فلما توفي النبي ﷺ قلت لها: أرأيت حين أكببت على النبي ﷺ فرفعت رأسک فبكيت، ثم أكببت عليه فرفعت رأسک فضحكت، ما حملک على ذلک؟ قالت: اني اذاً لبذرة، أخبرني أنه ميت من وجعه هذا فبكيت؛ ثم أخبرني أني أسرع أهله لحوقاً به فذلک حين فضحكت".(الجامع الصحيح للترمذي، ج٥، ص٧٠٠)

तर्जुमा: सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا फरमाती हैं, के खड़े होने और बैठने में सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से ज़ियादा नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم से मुशाबहत रखने वाला मैं ने किसी को नहीं देखा। जब वह आप से मिलने आतीं तो आप उन की मोहब्बत में खड़े हो जाते, बोसा लेते और अपनी जगह पर उन को बिठाते थे। इसी तरह जब नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم उन से मिलने जाते तो वह अपनी जगह से उठ कर आप का बोसा लेतीं और अपनी जगह पर आप को बिठाती थीं। जब नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم बीमार हुए तो सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا आई और आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के ऊपर झुक गई, आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने उन का बोसा लिया। फिर जब सर उठाया तो रोने लगीं। दोबारा आप पर झुकीं, सर उठाया तो हँसने लगीं। यह क्या बात थी? फरमाया: मैं उस वक़्त बहुत ग़मज़दा हुई जब आप ने बताया के मैं इसी बीमारी में वफ़ात पा जाऊंगा। यही सुन कर मैं रोने लगी। फिर जब आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने बताया कि मैं आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के अहल رضی اللہ عنہم में सब से पहले आप से मिलूँगी तो यह सुन कर मैं हँसने लगी।”

हदीष : 10

١٠. عن عروة قال: قالت عائشة لفاطمة بنت رسول الله: الا ابشرک انی سمعت رسول الله ﷺ يقول: سيدات نساء اهل الجنة اربع: مريم بنت عمران، وفاطمه بنت رسول الله، وخديجه بنت خويلد، وآسية. (ابن كثير: البداية والنهاية، ج ٢، ص ٤١٠، السيوطی: الدر المنثور، ج ٢، ص ٢٣)

तर्जुमा: “उरवा कहते हैं कि सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا बिंते रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم से फरमाया: सुना है कि जन्नती औरतों की सरदार चार हैं: सय्यिदा मरियम बिन्त इमरान رضی اللہ عنہا, सय्यिदा फ़ातिमा बिन्ते صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم, सय्यिदा ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद رضی اللہ عنہا और आसिया رضی اللہ عنہا ।”

हदीष : 11

١١ . عن عائشة، قالت: دعا رسول الله ﷺ فاطمة في مرضه فسارها فبكت، ثم سارها فضحكت ،فسألتها عن ذلك ماالذى رأيت الذى سارك فبكيت،ثم سارك فضحكت؟ فقالت: "أخبرني رسول الله ﷺ بموته فبكيت، ثمأخبرني اني أول ممن يتبعه من أهله فضحكت".(الصحيح لمسلم،ج٤،ص١٩٠٤)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि अपनी बीमारी में रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को बुलाया और उन के काम में कुछ कहा, जिसे सुन कर वह रोने लगीं। दूसरी बार कान में कुछ कहा जिसे सुन कर वह हँसने लगीं। मैं ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से इस हँसने और रोने का सबब मालूम किया तो सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا ने बताया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने पहले मुझे बताया कि मैं वफ़ात पाने वाला हूँ। इस ख़बर से मैं रोने लगी। दूसरी मर्तबा यह फरमाया के मैं आप ﷺ के अहले बैत رضی اللہ عنہم में सब से पहले आप से मिलूँगी। यह ख़बर सुन कर मैं हँसने लगी।"

हदीष : 12

١٢ . عن محمد بن عبدالله بن عمرو بن عثمان، أن أمه فاطمة بنت حسين حدثته،أن عائشة، كانت تقول : ان رسول الله ﷺ في مرضه الذى قبض فيه،قال لفاطمة: "يا بنية احني علي"، فأحنت عليه فناجاها ساعة ثم انكشفت وهي تبكي وعائشة حاضرة، ثم قال رسول الله ﷺ بعد ذلك بساعة: احني علي يا بنية، فأحنت عليه فناجاها ساعة ثم انكشفت عنه، فضحكت، قالت عائشة: فقلت: أي

بنية ، أجبريني ماذا نا جاک أبوک؟ فقالت فاطمة : ناجاني على حال سر، ظننت أني أخبر بسره وهو حي فشق ذلک على عائشة أن يكون سراً دونها، فلما قبضه الله، قالت عائشة لفاطمة: يا بنية، ألا تخبريني بذلک الخبر؟ قالت :أما الان، فنعم ، ناجاني في المرة الاولى فأخبرني أن جبريل عليه السلام كان يعارضه بالقرآن في كل مرة، وأنه عارضه بالقرآن العام مرتين ،وأز كبرني أنه أخبره أنه لم يكن نبي الا عاش نصف عمر الذى كان قبله، وأنه أخبرني أن عيسى ابن مريم عاش عشرين ومئة سنة ولا أراني ذاهباً على راس الستين فأبكاني ذلک ، وقال: يا بنية، انه ليس من نساء المسلمين امرأة أعظم رزية منک، فلا تكوني أدنى من امرأة صبراً، وناجاني في المرة الاخرة فأخبرني أني أول أهله لحوقاً به، وقال : انک سيده نساء أهل الجنة الا ما كان من البتو ل مريم بنت عمران "، فضحكت لذلک.(دلائل النبوة للبيهقي، ج۷ص ۱۴۵ . ۱۴۴)

तर्जुमा: “मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन उस्मान से रिवायत है कि उन की वालिदा फ़ातिमा बिन्त हुसैन ने बयान किया कि उम्मुल मु’मिनीन सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने अपनी उस बीमारी में जिस में आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की वफ़ात हुई, सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से कहा: प्यारी बेटी! ज़रा झुक कर मेरे क़रीब आओ। वह झुक कर आप के क़रीब हो गई। आप ने उन के कान में थोड़ी देर तक कुछ कहा, फिर वह आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم से रोते हुए अलाहिदा हुई और सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا वहाँ मौजूद थीं। इस के थोड़ी देर बाद आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फरमाया: प्यारी बेटी! ज़रा झुक कर मेरे मुँह के क़रीब आओ। वह झुक कर आप से क़रीब हो गई।

आप ने उन के कान में थोड़ी देर तक कुछ कहा, फिर वह आप से हँसते हुए अलाहिदा हुई। मैं ने कहा: बेटी! ज़रा मुझे भी बताओ आप के अब्बु ने आप से क्या सरगोशी की है? सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا ने जवाब दिया: आप ने एक राज़ की बात मुझे बताई है, मेरे लिए मुनासिब नहीं है के आप की ज़िंदगी में आप के राज़ का अफ़शा करूँ। सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا को यह बात शाक़ गुज़री कि उन को नज़र अंदाज़ कर के इस क़िस्म की राज़दाराना गुफ़्तगू की गई है। जब आप صلی اللہ علیہ وسلم की वफ़ात हो गई तो सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا ने फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से पूछा: बेटी! क्या अब वह बात मुझे बता सकती हो? सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا ने कहा के अब बताने में कोई हर्ज नहीं। पहली बार की सरगोशी में आप ने मुझे बताया: जिबराईल علیہ السلام हर साल कुर्आन का दौर मुझे सिर्फ एक बार कराते थे लेकिन इस साल उनहों ने दो बार कुर्आन का दौर कराया है। आप صلی اللہ علیہ وسلم ने यह भी फ़रमाया कि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जो अपने पेश रौ नबी की निस्फ़ उम्र से ज़ियादा ज़िंदा रहा हो। ईसा इब्न मरियम علیہ السلام की उम्र एक सौ बीस साल की थी मुझे लगता है, अपनी उम्र के साठ साल पूरे होने पर मैं दुनिया से रुख़्सत हो जाऊँगा। आप की इस गुफ़्तगू ने मुझे रुला दिया। आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फिर फ़रमाया के ऐ बेटी! मुसलमानों में कोई औरत नहीं होगी जिस की ज़रियत तेरी ज़रियत से बढ़ कर हो। लिहाज़ा तुम बेसबरी मत बनना। दूसरी बार सरगोशी करते हुए आप ने बताया कि मेरे अहल में सब से पहले आ कर तुम मुझ से मिलोगी। मज़ीद फ़रमाया के तुम जन्नत की औरतों की सरदार हो अलबत्ता बुतूल मरियम बिन्त इमरान رضی اللہ عنہا अपनी क़ौम की औरतों की सरदार होंगी। यह सुन कर मैं हँसने लगी।”

हदीष : 13

۱۳. عن عائشة قالت:ان النبی ﷺ قال لفاطمة:هی خیر بناتی لانها اصیبت فی.(الروض الانف للسهیلی،ج ۱،ص ۲۸۰)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा ؓ बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदा फ़ातिमा ؓ के मुतअल्लिक़ फ़रमाया: वह मेरी तमाम बेटियों में सब से अफ़्ज़ल है क्यूँ कि उसे मेरी वजह से मसायब से दो चार होना पड़ा है।"

हदीष : 14

۱۴. عن عائشة:انه قال لفاطمة:ان جبریل اخبرنی انه لیس امرأة من نساء المسلمین اعظم رزیة منک.(فتح الباری للعسقلانی، ج۸، ص ۱۱۱)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा ؓ बयान करती हैं के मैं रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदा फातिमा ؓ के मुताल्लिक फरमाया: जिबराईल ؑ ने मुझे बताया है के दुनिया में कोई मुसलमान औरत ऐसी नहीं है जिस ने सय्यिदा फातिमा ؓ से जियादा तकलीफें बर्दाश्त की हों ।

हदीष : 15

۱۵. عن عائشة قالت:ما رأیت قط احداً افضل من فاطمة غیر ابیها.(الاصابة لابن حجر، ج۴،ص ۳۷۸)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा ؓ बयान करती हैं के मैं ने सय्यिदा फ़ातिमा ؓ से ज़ियादा अफ़्ज़ल उन के बाप के अलावा किसी को नहीं देखा।"

हदीष : 16

١٦. قـالـت عـائشة: مـارأيـت احـداً قط اصدق من فـاطمة غير ابيها.(حلية الاولياء لابى نعيم، ج ٢،ص ٤١)

तर्जुमा: "सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं के मैं ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से ज़ियादा सच्चा उन के बाप के अलावा कभी किसी को नहीं देखा।"

हदीष : 17

١٧. عن عـائشة:مارأيت احداً كان اصدق لهجة من فاطمة الا ان يكون الذى ولدها.(الاستيعاب لابن عبد البر، ج٤،ص٣٧٧)

तर्जुमा: "सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं के मैं ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से ज़ियादा सच्चा लहजा किसी का नहीं देखा बजुज़ उस ज़ाते गिरामी के, जिस की वह औलाद थीं।"

हदीष : 18

١٨. عن عـمـرو بـن ديـنـار قـال:قـالت عائشة:مارأيت احداً قط اصـدق مـن فـاطمة غير ابيهاوروى:انه كان بينهما شيء فقالت:سلها فانها لا تكذب.(مسند ابى يعلى وحلية الاولياء)

तर्जुमा: "जमीअ बयान करते हैं के मैं जवानी में अपनी वालिदा के साथ सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरी वालिदा ने गुफ़्तगू के दरमियान अली رضی اللہ عنہ का तज़किरा छेड़ दिया। सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया: मैं ने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की नज़र में उन से (या'नी अली رضی اللہ عنہ) ज़ियादा महबूब कोई मर्द नहीं देखा। इसी तरह रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की नज़र में उन की बीवी (या'नी सय्यिदा फातिमा जहरा पाक رضی اللہ عنہا) से ज़ियादा महबूब कोई औरत नहीं देखी।"

हदीष : 19

١٩. عن جميع عن عائشة قالت: دخلت عليها مع امي وانا غلام فذكرت معها علياً فقالت عائشة: مارأيت رجلاً كان احب الى رسول الله ﷺ منه ولا امرأة احب الى رسول الله ﷺ من امرأته. (التاريخ لمدينة دمشق لابن عساكر، ج٢، ص ١٤٤)

तर्जुमा: "जमीअ बिन उमैर तैमी बयान करते हैं कि मैं अपनी फूफी के साथ सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरी फूफी ने पूछा: अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ की नज़र में सब से ज़ियादा कौन महबूब था? जवाब दिया: सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا। पूछा: मर्दों में सब से ज़ियादा कौन महबूब था? जवाब दिया: उन के शौहर जहां तक मुझे मालूम है, वह बकसरत नफ़्ली रोज़ा रखने वाले और तहज्जुद पढ़ने वाले थे।"

हदीष : 20

٢٠. عن جميع بن عمر التميمي قال: دخلت مع عمتي على عائشة فسألت: اى الناس كان احب الى رسول الله ﷺ؟ قالت فاطمة. فقيل من الرجال؟ قالت: زوجها ان كان ما علمت صواماً قواماً. (الاستيعاب لابن عبد البر، ج٢، ص ١٥٧)

तर्जुमा: अमर बिन दीनार बयान करते हैं के सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया: मैं ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से ज़ियादा सच्चा उन के वालिद के अलावा किसी को नहीं देखा। यह भी बयान किया जाता है कि एक मर्तबा नबीए करीम ﷺ और आ़इशा رضی اللہ عنہا के दरमियान कोई बात हो गई तो आ़इशा رضی اللہ عنہا ने कहा: ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से पूछ लें, वह कभी झूठ नहीं बोलतीं।"

हदीष : 21

٢١. عن عائشة وام سلمة قالتا: امرنا رسول الله ﷺ ان نجهز فاطمة حتى ندخلها على عليمدنا الى البيت ففرشناه ترابا ليناً من اعراض البطحاء ثم حشونا مرفقتين ليفاً فنفشناه بايدينا ثم اطعمنا تمراً وزبيباً وسقينا ماء عذباً وعمدنا الى عود فعرضناه في جانب البيت ليلقي عليه الثوب ويعلق عليه السقاة فما رأينا ه عرساً احسن من عرس فاطمة. (السنن لابن ماجة، ج٢، ص ٢١٤)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا और उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म दिया कि हम सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को दुल्हन बना कर अ़ली رضی اللہ عنہ के पास पहुंचा दें। हम पहले उस कमरे में गए जहाँ सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को रहना था, वहाँ हम ने सरज़मीने बतहा की नर्म रेत बिछा दी, ख़जूर की पत्तियों से दो गद्दे तैयार किए और अपने हाथों से उसे सिला। फिर ख़जूर और किशमिश से ख़ाना तयार कर के ख़िलाया और मीठा पानी पिलाया। कमरे में एक लकड़ी लगा कर उस पर पर्दा डाल दिया, उसी लकड़ी पर पानी का छागल लटका दिया। इस तरह हम ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से ख़ूबसूरत शादी कहीं और नहीं देखी।

हदीष : 22

٢٢. يا نسوة استرن با لمعا جر
واذكرن مايحسن في المحاضر
واذكرن رب الناس اذ خصنا
بدينه مع كل عبد شاكر
فالحمد لله على افضاله
والشكر لله العزيز القادر
سرن بها والله اعطي ذكرها
وخصها منه بطهر طاهر
(توفيق علم:اهل البيت،ص ١٢٨)

तर्जुमा: सय्यिदा फ़ातिमा ﷝ की शादी के मौक़े पर सय्यिदा आ़इशा ﷝ ने यह अशआर पढे।

- ऐ औरतो! इस्लामी हिजाब इख़्तियार करो और मजलिसों के मुनासिब अच्छी बातें करो।
- याद करो के परवरदिगारे आलम ने हर शुक्र गुज़ार बंदे के साथ हमें भी अपने दीन से नवाज़ा है।
- अल्लाह ﷻ जो अज़ीज़ व क़ादिर है हम उस के फजल व एहसान पर उस की हम्द गाते और उस का शुक्र अदा करते हैं।
- सय्यिदा फ़ातिमा ﷝ को देख कर ख़ुश हो जाओ, अल्लाह ﷻ ने उन का ज़िक्र बलन्द किया है और उन को अपनी महबूबीयत से नवाज़ा है।

हदीष : 23

۲۳. عن عائشة ان رسول الله ﷺ قال: فاطمة بضعة منی من آذاها فقد آذانی.(المودة القربی للهمدانی،ص۱۰۳)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरे जिगर का टुकड़ा है, जिस ने उसे तकलीफ़ दी, उस ने मुझे तकलीफ़ दी।"

हदीष : 24

۲۴. عن عائشة قالت:قال رسول الله ﷺ: اذا کان یوم القیامة نادی مناد:یا معاشر الخلائق طأطؤا رؤوسکم حتی تجوز فاطمة بنت محمد ﷺ.(مسند فاطمة للسیوطی،ص۱۵)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: कयामत के दिन एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ देते हुए ऐलान करेगा: ऐ लोगो! अपने सर झुका लो, ताकि सय्यिदा फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद ﷺ यहाँ से गुज़र सकें।

हदीष : 25

۲۵. عن عائشة قالت:قال رسول الله ﷺ: اذا کان یوم القیامة نادی مناد من بطنان العرش:ایها الناس،غضوا ابصارکم حتی تجوز فاطمة الی الجنة.(مسند فاطمة للسیوطی،ص۴۸)

तर्जुमा: "सय्यिदा आ़इशा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: कयामत के दिन साकिनाने अर्श का एक मुनादी ऐलान करेगा कि ऐ लोगो! अपनी निगाहें नीची कर लो ताकि सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا यहाँ से गुज़र कर जन्नत में जा सकें।"